जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

प्रेषक : *डॉ. मुमताज अहमद खान*
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

क्रमांक 11
दिनांक 25.01.2022

देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका
जनेकृविवि में क्षेत्रीय फसलों के विविधीकरण पर कार्यशाला संपंन

जबलपुर 25 जनवरी। आजादी के 75 में अमृत महोत्सव के अंतर्गत जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में ''क्षेत्रीय फसलों के विविधीकरण'' विषय पर श्री शैलेन्द्र सिंह कृषि उत्पादन आयुक्त मप्र शासन के मुख्यातिथ्य एवं कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन की अध्यक्षता में एक दिनी आनलाईन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें तीन राज्यों (मप्र, उप्र व राजस्थान) के कृषि के विख्यात वैज्ञानिक शामिल हुये। प्रारंभ में अपने स्वागत भाषण में संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतू ने फसलों के विविधीकरण पर प्रकाश ड़ाला और इसकी उपयोगिता के बारे में बताया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के कृषि उत्पादन आयुक्त श्री शैलेंद्र सिंह आईएएस ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। फसलों के विविधीकरण विषय पर किसानों को नये एवं उपयोगी सुझाव व समस्याओं के समाधान हेतु जानकारी प्रदान करें एवं जो सुझाव दिए जायें वह किसान के परिपेक्ष में मूल्यांकन करने वाला हो जो उनके लिए उपयोगी साबित हो। उन्होंने आगे कहा इस विषय पर विचार करना अतिआवश्यक है। फसलों के विविधीकरण हेतु प्रशासन की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होगी।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने कहा कि यह कार्यशाला मध्यप्रदेश, राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश के किसानों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। हमारे किसानों को आर्थिक रूप से एवं उनकी आय में वृद्धि करने हेतु महत्वपूर्ण जानकारी एवं कृषि तकनीकी के हस्तांतरण में महती भूमिका होगी।

इसके बाद देश के जानेमाने कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कृषि के विविधीकरण पर मंथन किया, जिसमें कृषि अभियांत्रिकी, उद्यानिकी, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन, कृषक समूहों, कृषि सहकारिता, कृषि आधारित उद्योग व एमएसपी पर विस्तार से चर्चा की गई एवं सभी वैज्ञानिकों ने देश के युवाओं से आव्हान किया कि कृषि को उद्योग मानकर चलें व नौकरी के पीछे ना घूमकर कृषि को लाभ का धंधा बनाकर अन्य बेरोजगारों को रोजगार दें। साथ ही पशुपालन को अपनाकर इनके उत्पादों से कृषि को उन्नत करें।

आज कृषि में बढ़ती जनसंख्या के भोजन हेतु एक बड़ी चुनौती है कृषि के उत्पादन में हरित सफेद नीली क्रांति हमें आत्मनिर्भर बनाया आज कृषि के क्षेत्र में उत्पादन व उत्पादकता हेतु अनेक समस्या तेजी से बढ़ रही है इन सब का समाधान हेतु फसल विविधीकरण कृषि में टिकाऊ उत्पादन और हमारे कृषकों को आमदनी बढ़ाने का सर्वोत्तम जरिया हो सकता है फसल विविधीकरण सूखे या आसमान वर्षा के प्रतिकूल जलवायु वाली परिस्थितियों में फसल की विफलता के जोखिम को कम करता है। देश को सामाजिक आर्थिक उत्थान रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा स्थाई आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और स्थाई विकास सुनिश्चित करने के लिए आने वाले वर्षों में कृषि विविधीकरण एक कुशल और प्रभावी प्रबंधन सिद्ध होगा।

कार्यशाला में राविसिंकृविवि के कुलपति डॉ. एस.के. राव, नादेपचिविविवि के कुलपति डॉ. एस.पी. तिवारी, निर्देशक अटारी डॉ. एस.आर.के. सिंह, केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल संचालक इंजी. राजीव चौधरी, आईआईव्हीआर वाराणासी के निदेशक डॉ. टी.के. बेहरा, वेटनरी परिषद नईदिल्ली के अध्यक्ष डॉ. उमेश शर्मा, सीईओ ई–फसल इन्दौर के अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र पस्तौर इत्यादि ने कृषि को लाभ का धंधा बनाने अपने विचार व्यक्त किये।

इस मौके पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, कुलसचिव श्री रेवासिंह सिसोदिया, लेखानियंत्रक श्री व्ही.एन. बाजपेयी, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. डी.पी. शर्मा, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. दीप पहलवान, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय डॉ. अतुल कुमार श्रीवास्तव, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. शरद तिवारी, डॉ. एस.बी. अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में वैज्ञानिकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. (श्रीमति) अनुपमा वर्मा एवं आभार प्रदर्शन राविसिंकृविवि के संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. संजय शर्मा ने किया।

–000–